The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 8 | August 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

डॉ. नागेश पांडेय "संजय" की बाल कहानियों और कविताओं का अन्य समकालीन बाल साहित्यकारों से तुलनात्मक अध्ययन

बेबी शर्मा[1] एवं *प्रो. आलोक मिश्रा[2]

[1]शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज, शाहजहाँपुर (सम्बद्ध: महात्मा ज्योतिबाफुले रोहिलखंड विश्वविद्यालय)

[2]आचार्य, हिन्दी विभाग, स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज, शाहजहाँपुर (सम्बद्ध: महात्मा ज्योतिबाफुले रोहिलखंड विश्वविद्यालय)

ई-मेल *पत्राचार लेखक: alokmishrasscollege@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17120273

प्रस्तावना

बाल साहित्य हिंदी साहित्य की वह धारा है जो बच्चों की संवेदनाओं, उनके विकास, कल्पना और नैतिक संस्कारों को ध्यान में रखते हुए रची जाती है (सिंह, 2016)। भारतीय बाल साहित्य परंपरा में पंडित विष्णु शर्मा (पंचतंत्र), ईसोप, आचार्य बालकृष्ण भट्ट, प्रेमचंद, रवींद्रनाथ ठाकुर, सुभद्राकुमारी चौहान, सुमित्रानंदन पंत आदि अनेक रचनाकारों ने बच्चों को जीवन के मूल्य सिखाने का प्रयास किया (मिश्र, 2017)। आधुनिक समय में भी अनेक साहित्यकार इस धारा को समृद्ध कर रहे हैं (शर्मा, 2021)। इन्हीं में से एक महत्वपूर्ण नाम है डॉ. नागेश पांडेय "संजय"। उनकी बाल कहानियाँ और कविताएँ बच्चों के लिए न केवल मनोरंजन का साधन बनती हैं, बल्कि वे जीवन-मूल्यों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सामाजिकता का पाठ भी सिखाती हैं (शुक्ल, 2019; पांडेय, 2015)। इस आलेख का उद्देश्य डॉ. संजय के बाल साहित्य का अध्ययन करते हुए, उसे अन्य समकालीन बाल साहित्यकारों - जैसे डॉ. रामजी तिवारी, सूर्यबाला, रवींद्र कुमार 'रवि', शंकर पुणतांबेकर, और डॉ. हरिशंकर परसाई आदि से तुलनात्मक दृष्टि से परखना है (वर्मा, 2020; त्रिपाठी, 2018)।

बाल साहित्य की संकल्पना और उद्देश्य

- मनोरंजन और शिक्षा का संतुलन मूल्य सिखाना-बच्चों को सरल भाषा में रोचक ढंग से जीवन - सिंह), 2016)।
- कल्पना का विस्तार परियों -, जादू, रोमांचक प्रसंगों और फैंटेसी के माध्यम से रचनात्मक सोच विकसित करना पांडेय), 2018)।
- नैतिक शिक्षा ईमानदारी -, सहयोग, परिश्रम, करुणा आदि मूल्यों का संवर्धन त्रिपाठी), 2018)।
- विज्ञान और आधुनिकता बच्चों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण -और तार्किकता की ओर प्रेरित करना वर्मा), 2020)।
- भारतीय संस्कृति और लोक जीवन से परिचय कविताओं के माध्यम से परंपरा और /कथाओं - मिश्र) संस्कृति का ज्ञान देना, 2017)।

डॉ. नागेश पांडेय "संजय" का बाल साहित्य

डॉ. नागेश पांडेय "संजय" का बाल साहित्य विशेष रूप से सरलता, हास्य-व्यंग्य, कल्पनाशीलता और नैतिक बोध से परिपूर्ण है (पांडेय, 2022; शुक्ल, 2019)। उनकी भाषा बच्चों के अनुकूल, सहज और प्रवाहपूर्ण है। उनकी रचनाओं में बाल-मन की जिज्ञासा, खेल-खिलंदड़ापन और जीवन-मूल्यों का संतुलित समावेश मिलता है, जो बच्चों को न केवल मनोरंजन प्रदान करता है बल्कि उन्हें सकारात्मक जीवन-दृष्टि भी देता है।

बाल कहानियों की विशेषताएँ

डॉ. नागेश पांडेय "संजय" की बाल कहानियों की सबसे प्रमुख विशेषता उनकी सरल भाषा और संवाद शैली है, जो बच्चों की समझ के अनुरूप सहज और प्रवाहपूर्ण प्रतीत होती है (पांडेय, 2015)। उनकी कहानियों में अक्सर वास्तविक जीवन प्रसंगों का चित्रण मिलता है, जिनमें स्कूल, परिवार, मित्रता तथा गाँव-शहर का जीवन प्रमुख रूप से झलकता है। इन कहानियों का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि इनमें आलस्य त्यागने, पढ़ाई की महत्ता समझने और प्रकृति-प्रेम को अपनाने जैसे नैतिक संदेश भी स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं (त्रिपाठी, 2018)। साथ ही, उनकी कहानियों में हास्य और रोचकता का समावेश बच्चों को कहानी से लगातार बाँधे रखता है और उन्हें बोरियत का अनुभव नहीं होने देता (शुक्ल, 2019)। उदाहरणस्वरूप, उनकी प्रसिद्ध कहानी *"चालाक बंदर"* बच्चों को बुद्धिमत्ता और संकट-प्रबंधन का पाठ सिखाती है, जबकि *"पढ़ाकू चींटी"* अनुशासन और परिश्रम के महत्व पर बल देती है (पांडेय, 2015; पांडेय, 2022)।

बाल कविताओं की विशेषताएँ

डॉ. नागेश पांडेय "संजय" की बाल कविताओं में लयात्मकता और संगीतात्मकता का विशेष महत्व है, जिसका उदाहरण उनकी प्रसिद्ध कविता *"चंदा मामा आओ जी"* में देखा जा सकता है (पांडेय, 2018)। उनकी कविताओं में प्रकृति-चित्रण अत्यंत जीवंत है, जहाँ पक्षियों, नदी, बादल आदि का चित्रण बच्चों के साथ सहज संबंध स्थापित करता है (पांडेय, 2019)। साथ ही, उनकी कविताओं में बाल-मन की जिज्ञासा को प्रश्नवाचक शैली और संवाद के माध्यम से व्यक्त किया गया है, जिससे बच्चों की रचनात्मक सोच और कल्पना को प्रोत्साहन मिलता है (शुक्ल, 2019)। विशेष रूप से उल्लेखनीय यह है कि लगभग हर कविता का अंत किसी न किसी नैतिक शिक्षा या जीवन-मूल्य की स्थापना के साथ होता है, जिससे बच्चों को मूल्यपरक जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है (पांडेय, 2023)।

समकालीन बाल साहित्यकार और उनकी विशेषताएँ

समकालीन बाल साहित्यकारों में डॉ. रामजी तिवारी की रचनाओं में ग्रामीण परिवेश और लोक संस्कृति की झलक स्पष्ट दिखाई देती है (मिश्र, 2017)। सूर्यबाला का लेखन व्यंग्यात्मक और यथार्थवादी दृष्टिकोण से परिपूर्ण है, जहाँ वे विशेष रूप से शहरी जीवन और बच्चों की समस्याओं को अभिव्यक्त करती हैं (शर्मा, 2021)। रवींद्र कुमार 'रवि' की कविताओं और कहानियों में विज्ञान तथा आधुनिकता की प्रधानता मिलती है, जहाँ बाल-मन की जिज्ञासा को वैज्ञानिक तथ्यों और तकनीकी दृष्टि से जोड़ा जाता है (वर्मा, 2020)। शंकर पुणतांबेकर अपनी हास्य-व्यंग्यपूर्ण शैली के लिए प्रसिद्ध हैं, जिनकी बालोपयोगी रचनाएँ बच्चों को रोचक ढंग से जीवन-मूल्य सिखाती हैं (त्रिपाठी, 2018)। वहीं डॉ. हरिशंकर परसाई की बाल कथात्मक रचनाओं में गहरी सामाजिक चेतना और व्यंग्य का स्वर मिलता है, जो बच्चों को सीधे नैतिक शिक्षा न देकर, सोचने और प्रश्न करने के लिए प्रेरित करता है (शर्मा, 2021)।

तुलनात्मक अध्ययन (सारणी)

पहलू	**डॉन .ागेश पांडेय "संजय"**	**अन्य समकालीन साहित्यकार**
भाषा	सरल, सहज, बालपांडेय) उपयुक्त-, 2015)	कभीकभी जटिल-, यथार्थवादी शर्मा), 2021)
विषयवस्तु	नैतिक शिक्षा कल्पना + हास्य + शुक्ल), 2019)	सामाजिक यथार्थ, विज्ञान, लोककथा वर्मा), 2020)
शैली	रोचक संवाद, बाल मन की-	व्यंग्य सूर्यबाला), परसाई(, विज्ञान (रवि)

	जिज्ञासा पांडेय), 2022)	
प्रकृति चित्रण	प्रमुख, जीवंत पांडेय), 2019)	अपेक्षाकृत कम
संदेश	जीवन मूल्य, परिश्रम, सहयोग त्रिपाठी), 2018)	सामाजिक चेतना, विज्ञानतकनीक-

विशिष्ट रचनाओं का विश्लेषण

डॉ. नागेश पांडेय "संजय" की कविता “चंदा मामा आओ जी” बाल-मन की कल्पना और लय का अद्भुत उदाहरण है। इस कविता में चाँद को एक आत्मीय चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो बच्चों को अपने पास बुलाता है और उनके खेलों का साथी बन जाता है। कविता में कल्पना और संगीतात्मकता का ऐसा मेल दिखाई देता है जो बच्चों को मोह लेता है (पांडेय, 2018)। तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो रवींद्र कुमार ‘रवि’ की कविताओं में चाँद जैसे विषयों को अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है, जहाँ कल्पना की बजाय तार्किकता और तथ्य प्रमुख होते हैं (वर्मा, 2020)। इस प्रकार, संजय का दृष्टिकोण भावनात्मक और कल्पनाशील है, जबकि रवि आधुनिक विज्ञान की ओर उन्मुख दिखाई देते हैं।

उनकी कहानी “पढ़ाकू चींटी” बच्चों को परिश्रम और अनुशासन का महत्व सिखाती है। कहानी में एक साधारण-सी चींटी के चरित्र के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि निरंतर परिश्रम और अनुशासन से ही सफलता प्राप्त की जा सकती है। इस कहानी की भाषा और शैली इतनी सरल और हास्यपूर्ण है कि बच्चे बिना बोरियत के अंत तक इससे जुड़े रहते हैं (पांडेय, 2015; 2022)। तुलना करें तो डॉ. रामजी तिवारी की कहानियों में भी नैतिकता का संदेश मिलता है, लेकिन वे अधिकतर ग्रामीण लोककथा की शैली में लिखी गई हैं, जहाँ ग्रामीण संस्कृति और लोक-परंपरा के माध्यम से शिक्षा दी जाती है (मिश्र, 2017)। इस दृष्टि से डॉ. संजय की रचनाएँ अधिक आधुनिक और बाल-मन की जिज्ञासा के अनुकूल प्रतीत होती हैं।

इसी प्रकार उनकी कविता “गौरैया का घर” पर्यावरणीय चेतना का सशक्त उदाहरण है। गौरैया को केंद्र में रखकर संजय ने बच्चों में पक्षियों के संरक्षण और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता का संदेश दिया है। यह कविता आज के समय में अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है क्योंकि यह बच्चों को न केवल प्रकृति-प्रेम बल्कि उसकी रक्षा करने की भी प्रेरणा देती है (पांडेय, 2019)। तुलना करें तो सूर्यबाला की रचनाओं में शहरी जीवन और सामाजिक विसंगतियों का चित्रण अधिक दिखाई देता है, जहाँ प्रकृति और पर्यावरण की

जगह शहरी समस्याएँ प्रमुख होती हैं (शर्मा, 2021)। इस तुलना से स्पष्ट होता है कि संजय की रचनाओं में प्रकृति का भावनात्मक और जीवंत चित्रण विशेष स्थान रखता है।

उनकी कहानी "चालाक बंदर" बुद्धिमत्ता, चतुराई और हास्य का अद्भुत संगम है। कहानी का नायक बंदर संकट के समय अपनी चतुराई और त्वरित निर्णय क्षमता से समस्या का समाधान करता है। यह कहानी बच्चों को न केवल रोचक लगती है बल्कि उन्हें यह भी सिखाती है कि कठिन परिस्थिति में धैर्य और बुद्धिमत्ता से काम लेना चाहिए (पांडेय, 2015)। तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो शंकर पुणतांबेकर की हास्य कहानियाँ भी बच्चों में लोकप्रिय रही हैं, लेकिन उनकी शैली में व्यंग्य का गहरा पुट होता है, जो कभी-कभी समाज पर तीखा कटाक्ष करता है (त्रिपाठी, 2018)। इसके विपरीत, संजय का हास्य अधिक सहज, सरल और बच्चों की समझ के अनुकूल है।

इसी क्रम में उनकी कविता "नदी बोले हमसे" प्रकृति से संवाद का अद्भुत उदाहरण है। इस कविता में नदी को मानवीय रूप देकर बच्चों से सीधे बात करवाई गई है। यह शैली बच्चों में न केवल जिज्ञासा उत्पन्न करती है बल्कि उन्हें यह अनुभव कराती है कि प्रकृति जीवंत है और उससे संवेदनशीलता से जुड़ना आवश्यक है (पांडेय, 2022)। यदि इसे हरिशंकर परसाई की रचनाओं से तुलना करें, तो परसाई की रचनाओं में सामाजिक व्यंग्य और यथार्थवादी चेतना प्रमुख होती है, जहाँ प्रकृति की अपेक्षाकृत कम उपस्थिति है (शर्मा, 2021)। इस दृष्टि से संजय की कविताएँ बच्चों को प्रकृति के प्रति भावनात्मक रूप से जोड़ने में अधिक सफल दिखाई देती हैं।

निष्कर्ष

डॉ. नागेश पांडेय "संजय" का बाल साहित्य समकालीन साहित्यकारों की तुलना में अधिक बाल-मन उन्मुख, सरल, हास्यपूर्ण और मूल्यपरक है (शुक्ल, 2019; पांडेय, 2023)। वे बच्चों को सीधे उपदेश नहीं देते, बल्कि संवाद, हास्य और कल्पना के माध्यम से मूल्य स्थापित करते हैं। जबकि अन्य समकालीन साहित्यकार कभी-कभी सामाजिक-यथार्थ, विज्ञान या व्यंग्य को अधिक प्राथमिकता देते हैं (वर्मा, 2020; शर्मा, 2021)।

संदर्भ सूची

1. मिश्र, रमेश) .2017). *भारतीय बाल साहित्य परंपरा.* इलाहाबाद.लोकभारती प्रकाशन :
2. पांडेय, नागेश) .2015). *बाल मन और बाल साहित्य.* दिल्ली.राजकमल प्रकाशन :
3. पांडेय, नागेश) .2018). *सपनों की उड़ानबाल कविताएँ .:* लखनऊ.नेशनल बुक ट्रस्ट :

4. पांडेय, नागेश) .2019). *गौरैया का घर और अन्य बाल कविताएँ*. वाराणसी.हिंदी साहित्य निकेतन :
5. पांडेय, नागेश) .2022). *पढ़ाकू चींटी और अन्य बाल कहानियाँ*. प्रयागराज.बाल साहित्य प्रकाशन :
6. पांडेय, नागेश) .2023). *बाल कल्पना और नैतिक मूल्य*. लखनऊ.उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान :
7. शर्मा, अशोक) .2021). *आधुनिक हिंदी बाल साहित्य की प्रवृत्तियाँ*. दिल्ली.भारतीय साहित्य प्रकाशन :
8. शुक्ल, हिमांशु) .2019). "डॉनागेश पां .डेय ."मन पर प्रभाव-की कविताओं का बाल 'संजय' *बाल साहित्य समीक्षा*, 12(3), 45-52.
9. सिंह, कुमुद) .2016). *हिंदी बाल साहित्य का विकास*. दिल्ली.साहित्य भवन :
10. त्रिपाठी, मनोज) .2018). *समकालीन बाल साहित्यस्वरूप और संवेदना :*. इलाहाबादहिंदी पुस्तक : .माला
11. वर्मा, सुरेश) .2020). *बाल साहित्य में विज्ञान और तार्किकता*. भोपाल.यूनिवर्सल प्रकाशन :